जयपुर राज्य में शिक्षा का विकास (1930-1940 ई.)

धीर सिंह

जयपुर राज्य में 20वीं शताब्दी का चौथा दशक शिक्षा के विकास में सर्वाधिक उन्नति की थी। विश्व आर्थिक मंदी के बाद और द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य का यह समय जयपुर रियासत के लिए सबसे महत्वपूर्ण था। इस दशक में राज्य, ठिकाने तथा निजी क्षेत्रों के द्वारा भी शिक्षा के विकास में योगदान दिया गया। हम 1930-1940 ई. के मध्य के दशक में जयपुर राज्य की शिक्षा प्रणाली को अलग-अलग बिन्दुओं में बाँटकर अध्ययन कर सकते है।

1931-1932 ई. में विशेष शिक्षा अधिकारी के. पी. किचलू ने अपना रियाटरमेंट लिया। नये शिक्षा अधिकारी का नाम शिक्षा निदेशक कर इस पद पर मि. ओवेन्स की नियुक्ति की गई। इसके अलावा उनको महाराजा कॉलेज का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया।[1] 1932-1933 ई. में मि. आवेस को महाराजा कॉलेज का स्थायी प्रिंसिपल नियुक्त किया। मि. एल. जी. साठे को नोबेल्स स्कूल गोनेर का प्रिंसिपल बनाया गया। जुलाई 1933 ई. को मिस. के. दामले, जो गर्ल्स स्कूल की महिला अधिक्षक थी उसने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।[2] इसके बाद गर्ल्स स्कूल की अधिक्षक मिस. लतीफा रूद्र को नियुक्त किया गया। इसके अलावा जयपुर राज्य में शिक्षा के विकास को आगे बढ़ाते हुए शारीरिक अधीक्षक नामक नया पद का सृजन किया जिस पर प्रथम नियुक्ति मि. ई. औ. सिंह को मिली।[3]

नवम्बर 1934 ई. को महाराजा कॉलेज के नये प्राचार्य मि. एम. आर ओक को बनाया गया जो पहले इसी कॉलेज में प्राचार्य पद पर नियुक्त थे। 5 मार्च को प्रोफेसर श्रीमती रामवती भटनागर ने महाराजा गर्ल्स स्कूल से इस्तीफा देने के बाद उसके स्थान पर नई नियुक्ति जुलाई 1935 ई. को मिस नै. सी. मार्टिन की नियुक्ति की गई।[4] इसी समय मिस लतीफा रूद्र ने महिला अधिक्षक पद से इस्तीफा दे दिया, उसके उपरान्त नया महिला अधिक्षक जनवरी 1936 ई. को मि. एम. ई. क्रुटेज की नियुक्ति हुई।[5] अप्रैल 1937 ई. को मि. एम. ई. क्रूटेज को महिला अधिक्षक पद से बर्खास्त कर दिया।[6] इसके उपरान्त यह पद एक वर्ष खाली रहा और 18 मार्च 1938

ई. को मि. एस. भारतीय की नियुक्ति की गई थी।[7]

1930–1940 ई. दशक के मध्य शिक्षा पर व्यय की बात की जाये तो 1930–31 ई. में 5 लाख 10 हजार 769 रूपये व 1931–1932 ई. में 6 लाख 14 हजार 419 रूपये, 1932–1933 ई. के मध्य 6 लाख, 39 हजार 943 रूपये, 1933–1934 ई. में 6 लाख 73 हजार, 1934–1935 ई. में 7 लाख 10 हजार 286 रूपये, 1935–1936 ई. में 6 लाख 64 हजार 220, 1936–1937 ई. में 6 लाख 63 हजार 887, 1937–1938 ई. में 6 लाख 61 हजार 114 रूपये, 1938–1939 ई. में 6 लाख 54 हजार 901, 1939–1940 ई. में 6 लाख 61 हजार 114 रूपये खर्च किये।[8] राज्य सरकार का कुल शिक्षा पर व्यय था। इसमें ठिकाना का भी शिक्षा व्यय का खर्च साथ में दिया गया है।

1930–1940 ई. दशक के मध्य अगर ठिकानों (सीकर, खेतड़ी, उनियारा) के शिक्षा खर्च की बात की जाये तो 1930–1931 ई. में 78 हजार 701 रूपया, 1931–1932 ई. में 1 लाख 27 हजार 072 रूपये, 1932–1933 ई. में एक लाख चार हजार आठ सौ रूपये, 1933–1934 ई. में एक लाख तीन हजार चार सौ रूपये, 1934–1935 ई. में एक लाख तीस हजार, 1936–1937 ई. में एक लाख बीस हजार सात सौ साठ, 1937–1938 ई. में एक लाख बाईस हजार पाँच सौ रूपये, 1938–1939 ई. में 1,25,907 रूपये, 1939–1940 ई. में 1,17,191 रूपये खर्च किये गये।[9]

सारणी सं.-1- राज्य में कुल शिक्षा पर व्यय (1931-1940 ई.)[10]

वर्ष	राज्य व्यय	ठिकाना व्यय	कुल व्यय
1931–1932	4,87,347	1,27,072	6,14,419
1932–1933	5,35,047	1,04,896	6,39,943
1933–1934	5,70,182	1,03,476	6,73,653
1934–1935	6,06,286	1,03,801	7,10,801
1935–1936	6,44,059	1,30,860	7,74,919
1936–1937	6,64,020	1,20,760	7,84,780
1937–1938	6,63,887	1,22,593	7,86,480
1938–1939	6,61,114	1,25,907	7,87,021
1939–1940	6,54,901	1,17,191	7,72,092

1930–1940 ई. के मध्य अगर कुल शिक्षण संस्थानों तथा उनमें पढ़ने वाले बच्चों की बात की जाये तो हम देखते है कि 1930–1931 ई. में कुल 852 शिक्षण संस्थान थे जिसमें 43,997 छात्र अध्ययन कर रहे थे। 1931–1932 ई. में कुल 872 शिक्षण संस्थान थे जिसमें 42,442 छात्र अध्ययन कर रहे थे। 1932–1933 ई. के मध्य 894 शिक्षण संस्थान थे जिसमें 47,969 छात्र अध्ययन कर रहे थे। 1933–1934 ई. में 971 शिक्षण संस्थानों में 52,001 छात्र अध्ययन कर रहे थे। 1934–1935 ई. में 958 शिक्षण संस्थानों में 52,635 छात्र, 1936–1937 ई. में 1,131 शिक्षण संस्थानों में 59, 585 छात्र व 1937–1938 ई. में 1118 शिक्षण संस्थानों में 60,108 छात्र, 1938–1939 ई. में 1215 शिक्षण संस्थानों में 64,258 छात्र, 1939–1940 ई. में 1094 शिक्षण संस्थानों में 62,969 छात्र अध्ययन कर रहे थे।[11]

1930–1940 ई. के मध्य अगर प्राइवेट शिक्षण संस्थानों की बात हो तो 1930–1931 ई. में 352 संस्थान, 1931–1932 ई. में 344 संस्थान, 1932–1933 ई. में 347 संस्थान, 1933–1934 ई. में 379 संस्थान, 1934–1935 ई. में 374 शिक्षण संस्थान, 1935–1936 ई. में 360 संस्थान, 1936–1937 ई. में 398 संस्थान, 1937–1938 ई. में 412 संस्थान, 1938–1939 ई. में 491 संस्थान, 1939–1940 ई. में 375 संस्थान कार्यरत थे।[12]

1930–1940 ई. के दशक के मध्य जयपुर राज्य में चटशालाओं और मकतबों का भी विकास हुआ। 1930–1931 ई. में कुल 281 चटशाला–मकतब थे जिसमें 7,931 छात्र अध्ययन कर रहे थे। 1931–1932 ई. में 801 चटशाला–मकतबों में 8,145 छात्र, 1932–1933 ई. में 320 चटशाला–मकतबों में 8,486 छात्र, 1934–1935 ई. में 326 चटशाला–मकतबों में 8,885 छात्र, 1935–1936 ई. में 426 चटशाला–मकतबों में 11,736 छात्र, 1936–1937 ई. के मध्य 450 चटशाला–मकतबों में 11,774 छात्र, 1937–1938 ई. में 424 चटशालाओं मकतबों में 12,014 छात्र, 1939–1940 ई. में 375 चटशालाओं में 11,110 छात्र अध्ययन कर रहे थे।[13]

सारणी सं.-2- जयपुर राज्य में शिक्षण संस्थान (1930-1940 ई.)[14]

वर्ष	राज्य स्कूल	प्राइवेट स्कूल	चटशाला/मकतब	कुल स्कूल
1930–31	219	352	281	852

1931–32	227	344	301	872
1932–33	227	347	320	894
1933–34	242	379	350	971
1934–35	258	374	326	958
1935–36	270	360	426	1056
1936–37	283	398	450	1131
1937–38	282	412	424	1118
1938–39	724	–	491	1215
1939–40	719	–	375	1094

सारणी सं.-3- जयपुर राज्य में छात्र संख्या (1930-1940 ई.)[15]

वर्ष	राज्य स्कूल में छात्र	प्राइवेट स्कूल में छात्र	चटशाला/मकतब	कुल स्कूल
1930–31	14800	21266	7931	43997
1931–32	16059	21238	8145	45442
1932–33	17375	22108	8486	47969
1933–34	18974	23258	9769	52001
1934–35	20170	23180	885	52635
1935–36	23351	23044	11776	36131
1936–37	22135	25676	11774	59585
1937–38	22544	23550	12014	60108
1938–39	51637	–	12621	64258
1939–40	51589	–	11110	622969

1930–1931 ई. के मध्य अगर कुल शिक्षित तथा अध्ययन करने वाले छात्रों में हिन्दू, मुस्लिम और अन्य धर्म जैसे जैन, सिक्ख धर्म के भी छात्र अध्ययन करते थे। हम इनको वर्ष अनुसार अध्ययन भी कर सकते है। 1930 ई. में कुल 43997 छात्र स्कूल जाते थे उसमें 35238 छात्र हिन्दू, 6101 छात्र मुस्लिम व 2658 छात्र अन्य धर्मो के थे। 1931–1932 ई. में कुल 45442 छात्र थे जिसमें 36539 हिन्दू, 6518 मुस्लिम, 2385 छात्र अन्य धर्मो के, 1932–1933 ई. में कुल 47969 छात्र थे जिसमें 38805 छात्र हिन्दू 6412 मुस्लिम 2752 छात्र अन्य धर्मो के 1933–

1934 ई. में 52001 छात्रों में 42059 छात्र हिन्दू, 7158 छात्र मुस्लिम व 2764 छात्र अन्य धर्मो के, 1934–1935 ई. में कुल छात्र 52635 थे जिसमें 43209 छात्र हिन्दू, 6790 छात्र मुस्लिम, 2636 छात्र अन्य धर्मो के अध्ययन कर रहे थे।[16]

1935–1936 ई. के मध्य कुल 56131 छात्रों में 45104 छात्र हिन्दू, 8275 छात्र मुस्लिम, 2752 छात्र अन्य धर्मो के, 1936–1937 ई. में कुल 59585 छात्रों में 47864 छात्र हिन्दू, 8726 छात्र हिन्दू व 2995 अन्य धर्मो के छात्र, 1937–1938 ई. में कुल 60108 छात्रों में 49715 छात्र हिन्दू, 7529 छात्र मुस्लिम व 2864 छात्र अन्य धर्मो के, 1938–1939 ई. में कुल 64258 छात्रों में 53378 छात्र हिन्दू, 7970 छात्र मुस्लिम, 2915 छात्र अन्य धर्म व 1939–1940 ई. में 62969 छात्रों में 52482 छात्र हिन्दू 7163 छात्र मुस्लिम व 3324 छात्र अन्य धर्मो के छात्र अध्ययन कर रहे थे।[17]

सारणी सं.-4- विभिन्न धर्मो के छात्र संख्या[18]

वर्ष	हिन्दू धर्म	मुस्लिम धर्म	अन्य धर्म	कुल संख्या
1930–31	35238	6101	2658	43997
1931–32	36539	6518	2385	45442
1932–33	38805	6412	2752	47969
1933–34	42059	7178	2752	52001
1934–35	43209	6790	2636	52635
1935–36	45104	8275	2752	56131
1936–37	47864	8726	2995	59585
1937–38	49715	7529	2864	60108
1938–39	53373	7970	2915	64258
1939–40	52482	7163	3324	62969

1930 ई. में जयपुर राज्य में 10 हाई स्कूले थी। इसमें से राज्य सरकार, तीन ठिकाने तथा पाँच प्राइवेट संस्थान थे।19 1931 ई. में एक नया हाई स्कूल नवलगढ़ में ब्रह्मचार्य आश्रम हाई स्कूल खोला गया। यह भी प्राइवेट शिक्षण संस्थान था।[20] 1933–1934 ई. में दो अन्य हाई स्कूल और खोले गये जिसमें मान नोबल्स स्कूल, गोनेर तथा बिशनबेर लाल हाई स्कूल, बगड़ (झुंझुनू) में खोला गया।[21] इस प्रकार 1930 ई. से 1940 ई. के मध्य कुल 13 हाई स्कूल जयपुर राज्य में संचालित थे जिनका नाम थे[22]:-

1. महाराजा हाई स्कूल, जयपुर (राज्य सरकार)

2. दरबार हाई स्कूल, जयपुर (राज्य सरकार)
3. मान नोबल्स हाई स्कूल, गोनेर (राज्य सरकार)
4. महाराजा गर्ल्स हाई स्कूल, जयपुर (राज्य सरकार)
5. जयसिंह हाई स्कूल, खेतड़ी (ठिकाना स्कूल)
6. एंग्लो वैदिक हाई स्कूल, जोबनेर (ठिकाना स्कूल)
7. श्री कल्याण हाई स्कूल, सीकर (ठिकाना स्कूल)
8. स्कॉटिश मिशन हाई स्कूल, जयपुर (प्राइवेट)
9. पारिक पाठशाला हाई स्कूल, जयपुर (प्राइवेट)
10. चिड़ावा हाई स्कूल, चिड़ावा (प्राइवेट)
11. बिड़ला हाई स्कूल, पिलानी (प्राइवेट)
12. सेठ जी.बी. पोद्दार हाई स्कूल, नवलगढ़ (प्राइवेट)
13. बिशमल लाल हाई स्कूल, बगड़ (प्राइवेट)

1930–1940 ई. दशक के मध्य अगर महिला शिक्षा की बात की जाये तो 1930–1931 ई. में 16 बालिका स्कूल थी जिसमें 772 छात्राएँ अध्ययन कर रही थी। इसमें 710 हिन्दू व 14 मुस्लिम व 48 छात्राएँ अन्य धर्म से थी। 1931–1932 ई. में कुल 16 स्कूलों में 856 छात्राएँ पढ़ रही थी जिसमें 784 हिन्दू छात्रा, 18 मुस्लिम छात्रा व 54 अन्य धर्मो की छात्राएँ अध्ययन कर रही थी।[23] 1932–1933 ई. में भी जयपुर में 16 बालिका स्कूल थे जिसमें 871 छात्राएँ अध्ययन कर रही थी। 1933–1934 ई. में दो नये बालिका स्कूल खुले तो इनकी संख्या 18 हो गई व छात्राओं की संख्या 855 तक पहुँच गई थी।[24]

1934–35 ई. के मध्य दो स्कूल और खोले गयेजिसमें 941 छात्राएँ अध्ययन कर रही थी। 1935–36 ई. में चार स्कूल और खोले गये तो इनकी संख्या बढ़ कर 24 हो गई थी जिसमें 1067 छात्राएँ अध्ययन कर रही थी। जहाँ 1934–35 ई. में बालिका एजुकेशन पर 38,678 रुपये खर्च किये थे वहीं 1935–36 ई. में 42,319 रुपये खर्च किये गये।[25] 1936–37 ई. में तीन और बालिका स्कूल खुले तो इनकी संख्या कुल 27 पहुँच गई। इन बालिका विद्यालयों में 1199 छत्राएँ अध्ययन कर रही थी। 1937–38 ई. में यह संख्या 1319 छात्राओं तक पहुँच गई थी। 1937–38 ई. में बालिका शिक्षा पर 47,748 रु. खर्च किये गये।[26] 1938–39 ई. में बालिका शिक्षा पर 46,391 रु. खर्च किये गये व 1939–40 ई. में 46,855 रु. खर्च किये गये। 1938–40 ई. के मध्य बालिका स्कूलों की संख्या तो 27 ही रही परन्तु छात्राओं की

पढ़ने की संख्या 1367 तक पहुचँ गई थी।

सारणी सं.-5-जयपुर निजामत में सभी धर्मो के शिक्षित व्यक्तियों की संख्या 1941 ई.[27]

निजामत /शहर	हिन्दू पुरूष - महिला	मुस्लिम पुरूष - महिला	ईसाई पुरूष - महिला	सिख पुरूष - महिला	जैन पुरूष - महिला	अन्य पुरूष- महिला
जयपुर शहर	21625-3329	5473 - 757	84 - 128	81 - 20	2555-1047	50 - 69
निजामत आमेर	8421-232	542 - 44	- -	46 - 2	312 - 30	- -
निजामत दौसा	10607-538	813 - 105	23-22	13 - 2	560-35	125 - 154
निजामत गंगापुर	4028-242	528 - 89	22-16	16 - 5	220-43	80 - 58
निजामत हिण्डोन	5837-117	490 - 11	1 - 1	1 - 0	443-12	- -
निजामत सवाई	5467-139	277 - 19	- -	5 - 1	750-38	1 - 2
निजामत कोट कासिम	831-67	1001 - 72	- -	- -	- -	- -
निजामत माधोपुर	4432-272	475-49	- -	8 - -	735 - 29	1 - -
निजामत मालपुरा	5304-384	398-10	- -	8 - 2	1375 - 99	2 - 1
निजामत सांभर	7688-438	748-57	49-41	3 - -	1538 - 103	64 - 58
निजामत शेखावाटी	16153-855	1470-106	- -	2 - 1	216 - 34	- -
निजामत तोरावाटी	14247-477	661-58	- -	- -	249 - 9	- -
ठिकाना खेतड़ी	7384-740	822-102	3 -1	4 - 3	14 - 3	- -
ठिकाना सीकर	9625-605	1190-423	3 - 1	6 - 5	645-83	3 - 4

निष्कर्ष

निष्कर्ष में कह सकते है कि 1930-31 ई. में जहाँ जयपुर राज्य में सरकारी शिक्षण संस्थानों की संख्या 219 थी वह 1940 ई. में तीन गुना बढ़कर 719 हो गई। 1930-31 ई. में छात्रों की संख्या सरकारी शिक्षण संस्थानों में 14,800 थी वह 1940 ई. में तीन गुना बढ़कर 51,589 हो गई। 1931 ई. में जहाँ राज्य की शिक्षा का व्यय 6,14,419 रु. था वह 1940 ई. में बढ़कर 7,72,092 रु. हो गया। 1930 में 10 हाई स्कूले थी वहीं 1940 ई. में 13 हाई स्कूलें जयपुर राज्य के द्वारा संचालित की जा रही थी। 1930 में कुल बालिका स्कूल 16 थी जिसमें 772 छात्राएँ पढ़ रही थी जो 1940 ई. में बढ़कर 18 बालिका स्कूल और छात्राओं की संख्या 1367 हो गई। इस प्रकार

हम कह सकते है कि 20वीं शताब्दी का चौथा दशक जयपुर राज्य में शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण था।

संदर्भ :

1. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1931–1932*, पृ. 54
2. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1932–1933*, पृ. 44
3. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1933–1934*, पृ. 45
4. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1934–1935*, पृ. 44
5. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1935–1936*, पृ. 48
6. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1936–1937*, पृ. 45
7. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1937–1938*, पृ. 45
8. 1931–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
9. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
10. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
11. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
12. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
13. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
14. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
15. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
16. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
17. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
18. 1930–1940 ई. की प्रशासनिक रिपोर्ट के आधार पर
19. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1930–1931*, पृ. 53
20. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1931–1932*, पृ. 46
21. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1933–1934*, पृ. 47
22. वही
23. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1931–1932*, पृ. 54
24. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1933–1934*, पृ. 48

25. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1935–1936*, पृ. 51
26. *रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर स्टेट, 1937–1938*, पृ. 48
27. *सेन्सस रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जयपुर स्टेट*, 1941, पृ. 177–179

सहायक आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय
चूरू (राजस्थान)